

# लाला लाजपतराय

विनोद



# लाला लाजपतराय

विनोद



# लाला लाजपतराय

विनोद

शिक्षा भारती, कश्मीरी गेट, दिल्ली

मूल्य : पांच रुपये (5.00)

संस्करण : १९८८ 

शिक्षा भारती, मदरसा रोड, कश्मीरी गेट, दिल्ली-110006 द्वारा प्र
LALA LAJPATRAI (Biography), by Vinod

# जन्म और शिक्षा

पंजाब की मिट्टी में वीरों का रक्त मिला हुआ है। बहादुरी और कुर्बानी में पंजाब सबसे आगे है। राजा रणजीतसिंह के बाद पंजाब में लाला लाजपतराय को ही 'पंजाब-केसरी' कहा जाता है। वे शेर की तरह निडर और साहसी थे। उनका शरीर निर्बल था, किन्तु उनकी आत्मा में अतुल बल था। वे जीवन-भर संसार की सबसे बड़ी राजशक्ति, ब्रिटिश सरकार से लड़ते रहे और अन्त में उन्होंने एक युद्ध में आहत सैनिक की तरह घायल होकर प्राण दे दिए। पंजाब का यह शेर सम्पूर्ण भारत का यशस्वी नेता था। भारत से बाहर भी उनका नाम बड़ी श्रद्धा से याद किया जाता है।

लाला लाजपतराय उन भाग्यशालियों में नहीं थे, जो महापुरुष या महान नेता बनने की सुविधाएं लेकर संसार में जन्म लेते हैं। वे ऐसे कुल में भी पैदा नहीं हुए थे जहां नेतृत्व के गुण मनुष्य के रक्त में मिले होते हैं। उनका जन्म एक साधारण घर में हुआ था।

उनके पिता लाला राधाकृष्ण पंजाब में एक छोटी-सी तहसील के स्कूल में शिक्षक थे। 28 जनवरी, 1865 ईस्वी के दिन आपका जन्म फिरोज़पुर जिले के ढोडिके ग्राम में हुआ। शिक्षा का आरम्भ भी गांव के स्कूल में ही हुआ। छः वर्ष तक गांव के स्कूलों में ही शिक्षा पाने के बाद आपने लुधियाना के मिशन हाई स्कूल में शिक्षा पाई और बाद में ज़ब पिताजी की नियुक्ति अम्बाला में हो गई तो आप अम्बाला में पढ़ने लगे। यहीं पर सन् 1880 में आपने पंजाब विश्वविद्यालय से मैट्रिक की परीक्षा पास की।

इस परीक्षा में आप इतने अच्छे अंकों में उत्तीर्ण हुए कि आपको छात्रवृत्ति मिलने लगी। इससे उत्साहित होकर पिताजी ने आपको लाहौर के गवर्नमेंट कालेज में पढ़ने को भेज दिया। इस कालेज से एफ० ए० की परीक्षा देने के बाद आपने मुख्त्यारी की परीक्षा भी पास कर ली।

किन्तु इन परीक्षाओं तक ही लाला लाजपतराय का विद्याभ्यास सीमित नहीं था। उनकी वास्तविक शिक्षा का क्षेत्र दूसरा ही था। उस समय के सार्वजनिक जीवन में जो विचारधाराएं चल रही थीं उनका आपके मन पर गहरा प्रभाव पड़ा था। स्वभाव से ही लाला

लाजपतराय लोकसेवक और परोपकारी व्यक्ति थे। किसी के दुःख में हाथ बंटाना और सहायता देना आपका स्वभाव था। इस प्रकृति ने जन्म-भर आपका साथ दिया। इसका प्रारम्भ आपके शिक्षाकाल से ही हो गया था।

उन दिनों पंजाब का आकाश स्वामी दयानन्द के सुधारक विचारों से गूंज रहा था। स्वामीजी देश का भ्रमण करके अपने क्रान्तिकारी विचारों का प्रचार कर रहे थे। आपने पंजाब का भी भ्रमण किया था। सन् 1877 में लाहौर में आर्यसमाज का प्रस्थापन हो चुका था। उन दिनों आर्यसमाज नये विचारों और बलिदान की भावनाओं का प्रतीक था। लोकसेवा के मार्ग में बढ़ने वालों के लिए आर्यसमाज का क्षेत्र ही सबसे अनुकूल था। पंजाब के सब विचारक व होनहार युवक इसी क्षेत्र में सम्मिलित हो रहे थे। लालाजी ने भी अपने दो मित्रों, पं० गुरुदत्त विद्यार्थी और लाला हंसराज के साथ आर्यसमाज के सेवकों में नाम लिखा दिया। तीनों मित्र स्वामी दयानन्द के सन्देश को पंजाब के युवकों तक पहुंचाने का काम करते रहे।

स्वामी दयानन्द के स्वर्गवास के अवसर पर गुरुदत्त विद्यार्थी स्वामीजी के दर्शनों को अजमेर गए थे।

तब लाहौर में लाला लाजपतराय ने ही सार्वजनिक सभा का आयोजन किया था। उस समय आपने स्वामीजी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए जिन मार्मिक शब्दों का प्रयोग किया था, उनकी स्मृति आर्य-समाज के इतिहास में सदा बनी रहेगी।

## सार्वजनिक जीवन का प्रारम्भ

अपने शिक्षाकाल में ही आपने आर्यसमाज के कार्यों में योग देना प्रारम्भ कर दिया था। इसका परिणाम यह हुआ कि आपके अध्ययन में विघ्न पड़ता रहा। वकालत की परीक्षा में उत्तीर्ण होने में आपको तीन वर्ष लग गए। वकालत की परीक्षा देने के बाद आप हिसार चले गए और वकालत शुरू कर दी। किन्तु आपकी शक्ति का बड़ा भाग आर्यसमाज के कार्य में ही खर्च होता था। समाज की स्थापना के लिए आपने अपनी आमदनी की सारी बचत डेढ़ हज़ार रुपये की रकम दान दे दी थी। यह रकम इतनी बड़ी नहीं थी जितनी कि इसकी प्रेरक भावना थी। अपने या अपने परिवार के भविष्य की चिन्ता न करके आपने सारी

बचत समाज को दान दे दी। इसके अतिरिक्त आपने हिसार में एक सांस्कृतिक विद्यालय की नींव भी रखी। हिसार के म्युनिसिपल बोर्ड के भी आप अवैतनिक मन्त्री रहे। तीन वर्ष तक आप यह सेवा निःशुल्क करते रहे।

किन्तु, हिसार का क्षेत्र आपकी विशाल शक्तियों के लिए पर्याप्त नहीं था। लाहौर के साथी भी आपका अभाव अनुभव कर रहे थे। उनका आग्रह था कि आप लाहौर को ही अपना कार्य-क्षेत्र बनाएं। लाहौर पंजाब का हृदय था। पंजाब की सभी प्रगतियों का केन्द्र-स्थल लाहौर ही था। लाला लाजपतराय यह जानते थे। इसलिए उन्होंने लाहौर को ही भावी जीवन का क्षेत्र बना लिया।

लाहौर आकर वे लाला हंसराज—जो बाद में महात्मा हंसराज के नाम से प्रसिद्ध हुए और जिन्होंने पं० गुरुदत्त के सहयोग से श्री दयानन्द एंग्लो-वैदिक कालेज की स्थापना की—से मिले। यह कालेज स्वामी दयानन्द के आदर्शों को कार्यान्वित करने के उद्देश्य से स्वामीजी की स्मृति में ही बनाया गया था। कालेज की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि सरकार की सहायता के बिना इसके संचालन का निश्चय किया गया था।

पंजाब में इस तरह का उद्योग इससे पूर्व किसी ने नहीं किया था। इस महान कार्य के लिए असाधारण संगठन-शक्ति की आवश्यकता थी। कालेज की स्थापना के लिए धन-संग्रह का कार्य भी बहुत आवश्यक था। लाला लाजपतराय ने पंजाब के नगरों में घूम-घूमकर जनता से धन की भिक्षा ली। उनके ओजस्वी भाषणों ने पंजाब की जनता को जागरित कर दिया। जहां भी आप जाते, लोगों की भीड़ उमड़ पड़ती और आपकी झोली भर जाती। स्त्रियों ने आभूषण देकर राष्ट्रीय महायज्ञ में योग दिया। पंजाब में राष्ट्रीय चेतना जागरित होने का यह पहला ही अवसर था।

आपके अनथक परिश्रम का परिणाम यह हुआ कि दयानन्द एंग्लो-वैदिक कालेज की स्थापना हो गई। आपने छः वर्ष तक कालेज-कमेटी के मन्त्रित्व का कार्य संभाला। लाला हंसराज कालेज के प्रिन्सिपल बने। इस पद पर आप पच्चीस वर्ष तक रहे। दोनों महापुरुष कालेज का सम्पूर्ण कार्य अवैतनिक रूप से करते रहे। तीसरे साथी पं० गुरुदत्त को बहुत छोटी अवस्था में ही भगवान के घर से निमन्त्रण आ गया। उस समय वे केवल पच्चीस वर्ष के थे। उनके बाद लालाजी का कार्यभार और भी बढ़ गया।

शिक्षा-प्रचार में डी० ए० वी० कालेज के संचालन तक ही लालाजी की प्रगति का अन्त नहीं हुआ। आर्य-समाज राष्ट्रीय शिक्षणालयों की स्थापना में आप निरन्तर सहयोग देते रहे। आपके सहयोग का अर्थ केवल नैतिक सहयोग या शाब्दिक सहानुभूति का प्रदर्शन नहीं था। आप बहुत ही कर्मनिष्ठ व्यक्ति थे।

लालाजी जिस कार्य में योग देते थे उसमें तन-मन-धन की संपूर्ण शक्ति लगा देते थे। डी० ए० वी० कालिज की प्रबंधकारिणी समिति के मन्त्री होने के साथ आप जालन्धर के एंग्लो-संस्कृत कालेज के भी मन्त्री रहे। इन शिक्षा सम्बन्धी प्रगतियों के कारण आपकी गणना भारत के शिक्षा-विशेषज्ञों में होने लगी। इस कारण जब सन् 1902 में लार्ड कर्ज़न ने शिक्षा-सम्बन्धी जांच-कमेटी का निर्माण किया तो आपको भी कमेटी के सामने गवाही देने का सम्मानपूर्ण निमन्त्रण दिया गया।

इन शिक्षा-सम्बन्धी कार्यों में आपकी केवल रुचि ही नहीं थी, बल्कि उसके लिए अपने मूल्यवान समय और धन की भी आपने कुर्बानी की थी। कठिन परिश्रम से आपने अब तक जो कुछ संचय किया था, सब इन शिक्षण-संस्थाओं को अर्पण कर दिया। इस संचित धन की राशि पचास हज़ार रुपये थी। स्वयं तपस्या का कठोर

जीवन व्यतीत करके आप अपने संचित धन का दान सार्वजनिक कार्यों के लिए कर देते थे। यही आपका स्वभाव बन गया था।

## समाज-सेवा के कार्य

शिक्षण कार्य में आपके उद्योग जब सफल हो गए तब आपने अपना कार्य-क्षेत्र अन्य दिशाओं में विस्तृत कर दिया। आप भी चाहते तो दयानन्द एंग्लो-वैदिक कालेज की सफलता को ही जीवन की विजय मानकर शेष जीवन आराम से बिता सकते थे। लाला हंसराज जी की तरह आप भी अपनी कार्यसीमा को परिमित बनाकर विश्रामपूर्ण जीवन व्यतीत कर सकते थे। किन्तु, आपका हृदय तो जनता के प्रत्येक कष्ट से दुःखी होता था। सन् 1896 में उत्तर भारत में भयंकर अकाल पड़ा। हज़ारों नर-नारी अन्न के अभाव में तड़प-तड़पकर प्राण देने लगे। गांव के गांव खाली हो गए। भूख और प्यास से बिलखते बच्चे भूखी-प्यासी माताओं की गोद में ही प्राण देने लगे। हज़ारों बच्चे अनाथ होकर शहरों की गलियों में भटकने लगे। यह दुष्काल समय के साथ भीषण होता गया। 1899 में

इसकी लपटें बंगाल, मध्यप्रान्त और राजपूताना की हरी-भरी घाटियों में भी पहुंच गईं। खेतियां सूख गईं, तालाबों का पानी सूख गया। अंग्रेज़ सरकार ने अकाल-पीड़ितों की सहायता के लिए जो कुछ किया, वह उनके आंसू पोंछने को भी पर्याप्त नहीं था। विदेशी शासकों के हृदय में सच्ची सहानुभूति कैसे हो सकती थी ? तब देश के लोकप्रिय नेताओं ने यह भार अपने कन्धों पर उठाया। लाला लाजपत राय उन नेताओं के अगुआ थे जिन्होंने अकाल-पीड़ितों की सहायता को जीवन-मरण का प्रश्न बना लिया था। एक बार फिर आपने गले में भिक्षा की झोली डालकर श्रीमानों का द्वार खटखटाया। नागरिकों ने उनकी झोली में यथाशक्ति दान दिया।

इस दुष्काल ने हिन्दू-जाति के सामने एक नई विकट समस्या उत्पन्न कर दी। अकालग्रस्त माता-पिताओं के अनाथ बच्चों को ईसाई पादरी अपनी शरण में ले रहे थे। हज़ारों बच्चे रोज़ ईसाई धर्म की छत्र-छाया में पनाह पाने लगे। अंग्रेज़ी सरकार ने भी इस काम में पादरियों की सहायता की। हज़ारों निस्सहाय बालक पादरियों को सौंप दिए गए। अकेले राजपूताना में ही सत्तर हज़ार हिन्दू बालक इसी तरह ईसाई पादरियों के अधिकार में जा चुके थे। इन बालकों को ईसाई धर्म में

दीक्षित कर लिया जाता था। लालाजी ने अनुभव किया कि यदि यह धर्म-परिवर्तन होता रहा तो हिन्दू-जाति का भयंकर ह्रास हो जाएगा। किन्तु उनकी रक्षा का एक ही उपाय था, उन्हें अन्न व वस्त्र की सहायता देना। और इतने से भी उनकी समस्या हल नहीं हो जाती थी। उन्हें पूरा आश्रय चाहिए था। उनको स्थायी अवलम्ब की आवश्यकता थी। इसी उद्देश्य से लालाजी ने आर्यसमाज के संगठन की सहायता लेकर कई शहरों में अनाथालय खोले। इन अनाथालयों में हज़ारों बालक शरण पाने लगे। फिरोज़पुर का अनाथालय सबसे बड़ा था। लालाजी ने इसके संचालन का भार स्वयं अपने कंधों पर लिया था। इसकी प्रबन्ध-कमेटी के प्रधान मंत्री स्वयं लालाजी थे। लाला लाजपतराय ने इस कार्य से हिन्दू-जाति पर जो उपकार किया वह इतिहास में स्मरणीय रहेगा।

1901 में सरकार ने दुर्भिक्ष कमीशन की नियुक्ति की। कमीशन के सामने गवाही देते हुए लालाजी ने फिर इस बात के लिए आग्रह किया कि उन अनाथ बालकों को, जिनके अभिभावकों की मृत्यु हो चुकी है, उनके धर्मावलम्बियों के ही सुपुर्द किया जाए; ईसाई मिशनरियों में उन्हें न भेजा जाए। लालाजी के आग्रह

ने सरकार को सावधान कर दिया। भविष्य में निराश्रित बालक सरकार द्वारा उनके सहधर्मियों के ही सुपुर्द किए जाने लगे।

दुष्काल के बाद पंजाब पर भूकम्प का प्रकोप हुआ। कांगड़ा ज़िले के भूकम्प में अनगिनत जन-धन की हानि हुई। निराश्रित पुरुषों और निरावलंब विधवा स्त्रियों की समस्या ने फिर हिन्दू-समाज को घेर लिया। लालाजी फिर कमर कसकर सहायता के काम में जुट गए। उनकी सहायता शाब्दिक सहायता नहीं होती थी। वे स्वयं घटनास्थल पर जाते थे और पीड़ितों को उपयोगी सहायता पहुंचाते थे। संकट-स्थल से दूर खड़े होकर केवल सन्देशों और वक्तव्यों द्वारा सहानुभूति प्रकट करना आपके स्वभाव के विरुद्ध था। भूकम्प के बाद आप खुद स्वयंसेवक बनकर गए; सैकड़ों दबे हुए लोगों को बाहर निकाला और अपने हाथों से घायलों की मरहम-पट्टी की।

1907-1908 में उड़ीसा व मध्यप्रान्त पर फिर दुष्काल के काले बादल छा गए। लाला लाजपतराय ने फिर स्वयंसेवकों की टोली बनाई और आपत्तियों से लड़ने के लिए मैदान में कूद पड़े।

अकाल-पीड़ितों की सेवा के साथ-साथ आपने हिन्दू

समाज के उपेक्षित वर्ग, हरिजनों के उद्धार के लिए भी ठोस काम किया। सन् 1912 में एक अछूत कान्फ्रेंस गुरुकुल कांगड़ी के सालाना जलसे पर आपके सभापतित्व में हुई। उस समय तक महात्मा गांधी ने हरिजन-सेवा का कार्य प्रारम्भ नहीं किया था। आर्यसमाज इस कार्य में क्रियात्मक योग दे रहा था। लाला लाजपतराय, जो स्वभाव से दलित वर्ग के सदा सहायक रहते थे, इस कार्य में भी अग्रणी हुए। केवल प्रचार-कार्य से ही आप संतुष्ट नहीं हुए। प्रत्येक सुधार के काम का आधार आप शिक्षा को समझते थे, अतः आपने हरिजनों की शिक्षा के लिए विशेष उद्योग किया। यह उद्योग बिना आर्थिक सुविधा के सफल नहीं हो सकता था, इसलिए आपने उसी वर्ष अपने पास से चालीस हज़ार रुपये का दान किया। स्वयं सर्वस्व समर्पित करने के बाद ही आप अन्य श्रीमानों से भिक्षा लेने के लिए उनके द्वार पर जाते थे।

लालाजी द्वारा प्रदत्त चालीस हज़ार रुपयों का उपयोग जगह-जगह अछूतों के लिए अनेक शिक्षण-संस्थाओं को खोलकर किया गया। इसके अतिरिक्त उच्च वर्ण के हिन्दुओं को अछूत को अपने समान समझने की शिक्षा भी दी गई। आप स्वयं अछूत समझे जानेवाले

भाइयों के घरों में गए और वहां उनके हाथ का भोजन खाकर सदियों पुरानी परिपाटी को भंग किया। आपका अनुकरण करके बाद में अन्य सुधारक व प्रचारक भी अछूत घरों में जाकर उनके साथ खाना खाने लगे। लाला लाजपतराय का हरिजन-सेवा का काम महात्मा गांधी के कार्य क्षेत्र में उतरने से पूर्व ही प्रारम्भ हो चुका था। इस सम्बन्ध में आप स्वामी दयानन्दजी को अपना गुरु मानते थे।

## कांग्रेस में प्रवेश

1885 में मि० ह्यूम ने तत्कालीन वायसराय लार्ड डफरिन की सलाह से 'इण्डियन नेशनल कांग्रेस' की स्थापना की थी। इसका चौथा अधिवेशन प्रयाग में 1888 में हुआ। लालाजी पहले-पहल इसी अधिवेशन के अवसर पर कांग्रेस में सम्मिलित हुए थे।

उस समय लालाजी की आयु केवल तेईस वर्ष की थी। इतनी छोटी अवस्था में भी आपको कांग्रेस के मंच से भाषण करने का अवसर दिया गया। उस अधिवेशन में आपने कौंसिल-सुधार-सम्बन्धी प्रस्ताव पेश

किया । इसके बाद आप प्रायः प्रत्येक कांग्रेस में भाग लेते रहे । 1892 में कांग्रेस का अधिवेशन प्रयाग में हुआ । इस अधिवेशन में बांटने के लिए आपने एक पत्रिका प्रकाशित की जिसका उद्देश्य सर सैयद अहमद के कांग्रेस-विरोधी आंदोलन का उत्तर देना था । सर सैयद ने पहले-पहल कांग्रेस की स्थापना में सहयोग दिया था, किन्तु अव सरकार से मिलकर उसका विरोध कर रहे थे । लाला लाजपतराय भी पहले सर सैयद के राष्ट्रीय विचारों से प्रभावित हुए थे, किन्तु अब उनके साम्प्रदायिक व अराष्ट्रीय कार्यों के प्रति उनके हृदय में तीव्र विरोध उत्पन्न हो गया था ।

प्रयाग के अधिवेशन से यह निश्चय किया गया कि कांग्रेस का अगला अधिवेशन लाहौर में हो । पंजाब में कांग्रेस का यह पहला अधिवेशन था । कांग्रेसी नेताओं को इस अधिवेशन के सफल होने में बहुत संदेह था, क्योंकि अभी तक पंजाब में राष्ट्रीय विचारों का प्रचार नहीं हुआ था । पांजब के मुसलमानों ने कांग्रेस के साथ सहयोग करने से स्पष्ट इंकार कर दिया । पंजाब में दूसरा प्रभावशाली वर्ग आर्यसमाजियों का था । आर्य-समाज के नेता भी यदि सहयोग न देते तो यह अधिवेशन लाहौर में न हो पाता । सौभाग्य से आर्यसमाजी वर्ग ने

कांग्रेस को सफल बनाने में पूरा उत्साह दिखाया। इसका श्रेय लाला लाजपतराय को था। उनकी प्रेरणा से आर्यसमाज ने कांग्रेस-अधिवेशन के प्रति सक्रिय सह्योग की भावना बनाई। लालाजी ने स्वय पंजाब के नगर-नगर का भ्रमण करके धन एकत्र किया। परिणाम यह् हुआ कि लाहौर का अधिवेशन पूर्ण सफलता के साथ निर्विघ्न संपन्न हुआ। लाला लाजपतराय ने स्वागत समिति के अध्यक्ष या मंत्री न होते हुए भी तन-मन से अधिवेशन को सफल बनाने में अनथक परिश्रम किया।

इस अधिवेशन के बाद लाला लाजपतराय के प्रति पंजाव सरकार की दृष्टि बदल गई। सरकार की दृष्टि में आप सरकार विरोधी पक्ष के नेता बन गए। उस विरोध का स्पष्ट प्रकाशन तब हुआ जब 1897 में सरकार ने लाहौर में रानी विक्टोरिया के शासन की हीरक-जयन्ती मनाने के लिए रानी की मूर्ति स्थापित करने का निश्चय किया। इस प्रस्ताव में सार्वजनिक समर्थन प्राप्त करने के लिए सरकार ने एक सभा बुलाई। लाला लाजपतराय भी अपने साथियों के साथ उस सभा में पहुंच गए। आप विक्टोरिया की मूर्ति स्थापित करने के विरुद्ध थे। आपका कहना था कि यदि वही धन पंजाब के अनाथों की सहायता में व्यय किया

जाए तो विक्टोरिया का सच्चा स्मारक बन सकता है। सरकार आपके विरोध को जानती थी, इसलिए जब आप सदलबल सभा में पहुंचे तो सरकार के पिट्ठू सार्वजनिक सभा से उठकर चले गए। हीरक-जयन्ती के उपलक्ष्य में मूर्ति स्थापित करने का प्रस्ताव रखा ही नहीं गया।

इस घटना के बाद लालाजी की राष्ट्रीय भावना प्रतिदिन तीव्र होती गई। उन दिनों कांग्रेस का संचालन नरमदल के नेता गोखले व दादाभाई नौरोजी के हाथ में था। केवल लोकमान्य तिलक और लाला लाजपत-राय के विचार इन नरमदलीय नेताओं से नहीं मिलते थे। महाराष्ट्र में लोकमान्य का प्रभाव बढ़ रहा था। दोनों के स्वभाव में कई अनुकूलताएं थीं, इसलिए दोनों ने मिलकर कांग्रेस की नीति को उग्र बनाने का निश्चय किया। इस निश्चय को कार्यान्वित करने में दोनों को बहुत विरोध सहना पड़ा, किन्तु अन्त में इनकी विजय हुई। कांग्रेस के नागपुर तथा सूरत-अधिवेशन में यह विरोध बहुत भयंकर रूप से प्रकट हो गया।

नरमदल के प्रतिनिधियों ने रासबिहारी घोष को अधिवेशन का सभापति चुना था। लोकमान्य ने लाला लाजपतराय का नाम पेश किया। लाला लाजपतराय

उस समय मांडले से छः महीने का निर्वासन-दंड भुगतकर छूटे थे। कांग्रेस का सूरत-अधिवेशन दोनों दलों के मतभेद का चरम-बिन्दु था। इसके बाद कई वर्षों तक नरम-गरम दल में विकट संघर्ष चलता रहा।

## देश निर्वासन का दंड

1905 में बंग-भंग आन्दोलन के कारण देश-भर में अंग्रेज़ सरकार के विरुद्ध प्रबल जनमत जाग गया था। बंग-विच्छेद से क्षुब्ध जनता को सरकार दमन की चक्की में पीस रही थी। हज़ारों देशवासी जेल के सीखचों में बन्द कर दिए गए।

बंगाल के क्रूर दमन का प्रभाव अन्य प्रान्तों पर भी पड़ा था। पंजाब सरकार ने भी अपने प्रान्त के देशभक्तों को चुन-चुनकर जेलों में भरना शुरू कर दिया। लाला लाजपतराय भी सरकार के इस दमन-चक्र से नहीं बच सके। कई घटनाएं ऐसी हो गईं जिनसे लाला लाजपतराय को दोषी ठहरा दिया गया। उन्हीं दिनों रावलपिंडी के किसानों में लगान की वृद्धि के विरुद्ध

असंतोष की आंधी चली। रावलपिंडी के कई प्रतिष्ठित नागरिक और वकील किसानों का पक्ष ले रहे थे। लाला लाजपतराय ने किसानों के पक्ष में वक्तव्य दिया। लाहौर से रावलपिंडी पहुंचकर आप वहां के ज़िला मजिस्ट्रेट से मिले। इस मुलाकात में दोनों के बीच कुछ गरमा-गरम बातचीत भी हुई। मजिस्ट्रेट का व्यवहार बहुत असभ्यतापूर्ण था। लालाजी भी अपमान सहन करना नहीं जानते थे। परिणाम यह हुआ कि रावलपिंडी के बहुत से वकील, जो किसानों का पक्ष ले रहे थे, पकड़कर जेल में भर दिए गए। लाला लाजपतराय को वहां गिरफ्तार नहीं किया गया; किन्तु पंजाब सरकार ने उन पर कड़ी निगरानी रखनी शुरू कर दी। बहुत कोशिश करने पर भी सरकारी अधिकारियों को लालाजी की गिरफ्तारी का कोई कानूनी कारण न मिल सका। उधर रावलपिंडी में जो वकील गिरफ्तार हुए थे, वे भी एक स्पेशल जज द्वारा छोड़ दिए गए।

सरकार जब कानून की रस्सियों में लालाजी को गिरफ्तार नहीं कर सकी, तब उसने 1818 के बंगाल रेग्युलेशन की शरण ली और उसके अन्तर्गत लालाजी को पकड़कर देश-निर्वासन का दण्ड दे दिया। किस अपराध में लालाजी की गिरफ्तारी हुई और किस

अभियोग में उन्हें देश-निर्वासन का दण्ड दिया गया—यह प्रश्न आज तक प्रश्न ही बना हुआ है। सरकारी रिकार्ड भी इसका कोई उत्तर नहीं देते।

लालाजी की गिरफ्तारी के लिए सरकार को कुटिल नीति का आश्रय लेना पड़ा। एक दिन आप वकालत के लिए चीफ कोर्ट जा रहे थे। रास्ते में दो पुलिस इंसपेक्टर आपकी गाड़ी पर चढ़ गए। उन्होंने लालाजी से कहा कि डिप्टी कमिश्नर साहब आपसे मिलना चाहते हैं। लालाजी ज डिप्टी कमिश्नर के सामने आए तो उन्हें एक वारंट दिखलाया गया। इस वारंट पर वायसराय और उनकी कमेटी के सदस्यों के हस्ताक्षर थे। इस वारंट के आधार पर ही आपको गिरफ्तार कर लिया गया। वहां से आपको घर जाने की आज्ञा भी नहीं दी गई। कुछ गोरे अफसरों की देखरेख में आपको मोटर पर बिठा दिया गया। यह मोटर आपको मियां-मीर ले गई। वहां से एक स्पेशल गाड़ी में बिठाकर आपको डायमंड हारबर लाया गया। वहां से आप जहाज़ द्वारा रंगून पहुंचा दिए गए। रंगून से गाड़ी पर बिठाकर 16 मई, 1907 को आपको मांडले पहुंचा दिया गया। मांडले की जेल में बन्द करके भी सरकार के दिल की ज्वाला शान्त नहीं हुई। यहां आपको अनेक

कष्ट दिए गए। अपने सम्बन्धियों से मिलने की आज्ञा नहीं दी गई। आपके छोटे भाई लाला धनपतराय जब आपसे मिलने मांडले पहुंचे, तब भी भेंट की अनुमति नहीं दी गई।

लाला जी के निर्वासन पर देश में असन्तोष की आंधी चल पड़ी। वायसराय की कमेटी में श्री गोखले ने भी इस पर दुःख प्रकट किया। ब्रिटिश पार्लियामेंट में भी प्रश्न हुए। स्वयं लालाजी ने भारत-मंत्री को निर्वासन आज्ञा के विरुद्ध पत्र लिखा। संसार के सामने स्पष्ट हो गया कि लालाजी को गिरफ्तार करके देश-निर्वासन देना भारत सरकार की स्वेच्छाचारिता थी। ब्रिटिश सरकार के मंत्री ने भी भारत सरकार से इस निर्वासन का कारण पूछा। सरकार कोई संतोषजनक उत्तर नहीं दे सकी। तब भारत-मंत्री ने लालाजी की मुक्ति का आज्ञापत्र निकाल दिया। लालाजी के साथ सरदार अजीतसिंह भी मांडले जेल में निर्वासित किए गए थे। दोनों को एक ही जेल में रखा गया, किन्तु आपस में मिलने की आज्ञा नहीं थी।

अन्त में 21 नवम्बर, 1907 ई० के दिन दोनों को छोड़ देने की आज्ञा हुई। रंगून से रिहा करके दोनों को एक स्पेशल गाड़ी द्वारा लाहौर पहुंचा दिया गया।



मांडले जेल में लालाजी

लाहौर में लालाजी की मुक्ति का समाचार किसी को ज्ञात नहीं था। यह बात बिल्कुल गुप्त रखी गई थी। लालाजी की मुक्ति के समाचार ने लाहौर में आनन्द की लहर दौड़ा दी। अचानक ही उन्हें अपने बीच पाकर सबके हृदय खुशी से खिल उठे।

छः मास के इस निर्वासन ने लालाजी की कीर्ति-पताका को सम्पूर्ण भारत के आकाश में बहुत ऊंचा उठा दिया। लाला लाजपतराय स्वभाव से संकोची प्रकृति के थे। स्वयं अपना विज्ञापन करके नेता बनने का गुण उनमें नहीं था। इसी कमी को सरकार ने पूरा कर दिया। निर्वासन-दंड देकर सरकार ने उनके नाम का जितना विज्ञापन कर दिया उतना शायद कोई और नहीं कर सकता था। इन छः महीनों में ही लालाजी पंजाब के ही नहीं, बल्कि समस्त भारत के लोकप्रिय नेता बन गए

# मांडले से लौटने के बाद

मांडले से लौटने के बाद भी लाला लाजपतराय ने विश्राम नहीं किया। अस्वस्थ होते हुए भी आपने उत्तर भारत का दौरा शुरू कर दिया। जिस शहर में भी आप जाते, जनता आपके स्वागत-सत्कार के लिए उमड़ पड़ती। जेल यात्रा ने आपके हृदय में विदेशी सरकार के विरुद्ध उठी भावनाओं को और भी दृढ़ बना दिया था। उनकी आत्मा में विदेशी शासन के विरुद्ध प्रबल विद्रोह की आग भड़क उठी थी। इसलिए जेल से वापस आने के बाद आपने सम्पूर्ण जीवन देश सेवा में अर्पण कर दिया। इससे पूर्व आप वकालत के व्यवसाय से जीवन-व्यय चलाते थे। आपके समय का बहुत-सा भाग वकालत के अर्पण हो जाता था। जेल से वापस आने पर आपने वकालत का पेशा सदा के लिए छोड़ दिया। अंग्रेज़ी अदालतों से न्याय की आशा व्यर्थ थी। ऐसी अदालतों में वकील की हैसियत से पेश होना भी आपने अपना अपमान समझा।

वकालत का व्यवसाय छोड़कर आपने देश सेवा के काम को ही जीवन का व्यवसाय बना लिया। कांग्रेस में उन दिनों नरम-गरम दलों का झगड़ा चल रहा था।

प्रकृति से ही आप गरम स्वभाव के थे। किन्तु नरम दल के नेताओं से विद्रोह करना भी आपको पसंद नहीं था। इसलिए कुछ समय तक आप कांग्रेस के कार्य से उदासीन-से रहे। किन्तु समाज-सेवा के कार्यों में आप तब भी सदा तत्पर रहे।

लाहौर की म्युनिसिपल कमेटी के प्रमुख सदस्य की हैसियत से आपने नगर के सुधार में सक्रिय भाग लिया। लाहौर के मुख्य बाज़ार अनारकली से वेश्याओं के निर्वासन-आन्दोलन को सफल बनाने में आपका ही हाथ था।

## विदेश यात्रा

उस समय राजनीति के कार्य का अभिप्राय केवल देश को अंग्रेज़ी शासन से मुक्त कराना था। लालाजी के समकालीन नेताओं, श्री गोखले और लोकमान्य तिलक का यह विचार था कि इस कार्य को सफल बनाने के लिए ब्रिटिश लोकमत को अपने पक्ष में करना बहुत आवश्यक है। ब्रिटेन के मज़दूर-दल का बहुत बड़ा भाग भारत को उत्तरदायी शासन देने के पक्ष में था।

रैम्ज़े मैकडॉनल्ड तथा उनके अनेक मित्र भारत के हितैषी होने का दावा करते थे। उनकी भी यही राय थी कि यदि भारत के कुछ जिम्मेदार नेता ब्रिटेन में आकर पार्लियामेंट के सदस्यों को अपने अनुकूल बना सकें तो भारत को औपनिवेशिक स्वराज्य मिल सकता है। इन ब्रिटिश राजनीतिज्ञों की सलाह से ही लाला लाजपतराय इंग्लैंड गए थे। इंग्लैंड पहुंचकर लालाजी ने वहां के प्रमुख राजनीतिज्ञों से भेंट की तथा इंग्लैंड की जनता के हृदय में भारत के प्रति सहानुभूति के भाव भरने का प्रयत्न किया था। वहां पहुंचकर आपने भारतीय भावनाओं को स्पष्ट करने के लिए जो साहित्य तैयार किया था, उसका उचित आदर और स्वागत हुआ। इंग्लैंड पहुंचकर आपने जनता के सम्मुख जो भाषण दिए उनको बहुत पसंद किया गया। आपके ही प्रयत्नों का यह परिणाम था कि ब्रिटिश जनता का बहुत बड़ा भाग भारत को आत्म-निर्णय का अधिकार देने के लिए तैयार हो गया था।

पहले-पहल लाला लाजपतराय व्यक्तिगत रूप से इंग्लैंड गए थे। वहां जाकर आपको जो अनुभव हुआ उसके आधार पर आपको कई बार इंग्लैंड जाना पड़ा। सन् 1912 में आप तीसरी बार इंग्लैंड गए थे। इस

बार आपको अपने इग्लैंड-स्थित पुत्र की बीमारी का समाचार मिला था। आपका यह पुत्र इंग्लैंड में पढ़ता था। लालाजी उसे इंग्लैंड से वापस ले आए, किन्तु उसकी जीवन-रक्षा न कर सके। इसी वर्ष उन्हें अपने जमाता के वियोग का दु:ख भी झेलना पड़ा।

इसके बाद करांची-कांग्रेस के नियमानुसार जो शिष्टमण्डल इंग्लैंड जाने के लिए बना, उसके सदस्य होकर आपको इंग्लैंड की यात्रा करनी पड़ी। कांग्रेस ने यह प्रस्ताव पास किया था कि प्रवासी भारतीयों के प्रति विदेशों में जो दुर्व्यवहार हो रहा था उसके निराकरण के लिए तथा भारतीय विधान में प्रस्तावित सुधारों के पक्ष में आन्दोलन करने के लिए एक शिष्ट-मण्डल इंग्लैंड में भेजा जाए। सन् 1914 में यह मण्डल इंग्लैंड गया। शिष्टमण्डल का कार्य जब पूरा हुआ तो अन्य सदस्य तो भारत वापस आ गए, किन्तु लालाजी वहीं रह गए। आपकी इच्छा जापान से होकर वापस आने की थी।

जापान की यात्रा समाप्त करके आप जब भारत आने की तैयारी कर रहे थे तभी यूरोप में महायुद्ध छिड़ गया। भारत सरकार ने ब्रिटेन-स्थित भारत-मंत्री से प्रार्थना की कि युद्धकाल में लाला लाजपतराय को

भारत जाने की इजाजत न दी जाए। भारत सरकार को डर था कि लाला लाजपत राय की उपस्थिति से भारत में अंग्रेज़ों के विरुद्ध जो भावना भड़क रही थी, वह और प्रबल हो जाएगी।

भारत-मंत्री ने भारत सरकार का आग्रह मानकर लालाजी को भारत वापस आने की आज्ञा नहीं दी। जब तक महायुद्ध चलता रहा, लालाजी का भारत-प्रवेश निषिद्ध रहा। जापान से आप फिर इंग्लैंड चले गए और वहां से नवम्बर, सन् 1914 में अमेरिका जा पहुंचे।

अमेरिका में रहते हुए भी आप अपने देश-सेवा के व्रत को निभाते रहे। महायुद्ध में अमेरिका ने भी ब्रिटेन का साथ दिया था। अमेरिका की सहायता से ही ब्रिटेन जर्मनी को परास्त करने में सफल हुआ था। इसलिए ब्रिटिश राजनीतिज्ञों को अमेरिका के लोकमत को सन्तुष्ट करते हुए ही सब काम करने पड़ते थे। लाला लाजपतराय ने भी अमेरिका की इस प्रभुता की कल्पना कर ली थी। इसलिए उन्होंने अमेरिका के जनमत को भारत के अनुकूल बनाने का अनथक उद्योग किया था। ब्रिटिश पत्र अमेरिका में भारत के प्रतिकूल वातावरण तैयार करने में पूरी तन्मयता से लगे हुए थे। वे इस बात का प्रचार कर रहे थे कि भारत का बहुमत ब्रिटिश

हुकूमत को चाहता है। वे इस झूठ का भी प्रचार कर रहे थे कि "भारत में राजनीतिक चेतना नाम की कोई वस्तु नहीं है। भारतवासी अभी तक जंगली और असभ्य हैं। वे अपने देश का शासन स्वयं नहीं कर सकते। इसलिए वहां का शिक्षित समाज ब्रिटिश शासन को चाहता है।" लाला लाजपतराय ने ब्रिटिश पत्रों द्वारा प्रचारित इन भ्रांतियों को दूर करने के लिए लेखन व भाषण की सहायता से बहुत उपयोगी काम किया। उनकी भाषा में वह बल था कि सुननेवाले तन्मय होकर उनके भाषण सुनते थे। उनकी लेखनी भी शक्तिशालिनी थी। 'तरुण भारत' नाम से एक पुस्तक लिखकर उन्होंने भारत की राष्ट्रीय भावनाओं का सुन्दर चित्र खींचा। उसमें उन्होंने यह भी दिखलाया था कि भारत के नौजवान ब्रिटिश शासन नहीं चाहते; वे भारत को स्वतन्त्र राष्ट्र बनाना चाहते हैं। इसके लिए वे बड़ी से बड़ी कुर्बानी करने को तैयार हैं।

आपने इस पुस्तक की एक-एक प्रति ब्रिटिश पार्लियामेंट के सदस्यों को भी भेंट की थी। उनके हाथ में इस पुस्तक के आने पर भारत सरकार ने पुस्तक की सब प्रतियां जब्त कर ली थीं। किन्तु अमेरिका में इस पुस्तक की हज़ारों प्रतियां हाथोंहाथ बिक गईं। इस

पुस्तक के प्रकाशन के बाद लाला लाजपतराय का सम्मान अमेरिकनों की दृष्टि में बहुत बढ़ गया। कई अमेरिकन पत्रों ने उन्हें भारतीय प्रश्न पर और अधिक प्रकाश डालने का निमन्त्रण दिया। उनके लेखों पर योग्य पुरस्कार भी दिया। अमेरिका की अनेक संस्थाओं की ओर से भी आपको भाषण देने के निमन्त्रण मिलने लगे। अनेक विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने आपको भाषण देने की दावत दी। लाला जी अपने देश की कथा सुनाने के प्रत्येक अवसर का पूरा उपयोग करते थे। वे जानते थे कि अमेरिका का लोकमत यदि भारतीय भावनाओं के अनुकूल बन गया तो ब्रिटेन को भारत में मनमानी करने का साहस नहीं होगा। अमेरिकावासी भारतीयों को असभ्य या अर्धसभ्य मानते थे। उनका विश्वास था कि ब्रिटेन ने भारत को अपनी छत्रछाया में लेकर उसपर महान उपकार किया है। लालाजी की लौह लेखनी ने इस विश्वास को मिटाने में बहुत उपयोगी काम किया।

केवल लेखनी द्वारा ही आपने भारत की प्रतिष्ठा नहीं बढ़ाई, बल्कि अन्य साधनों से भी प्रतिष्ठा-वृद्धि में सहायता की। आपने अमेरिका में इंडियन होमरूल लीग की स्थापना की। इस कार्य में उनके सहायक

डा० केशव शास्त्री और डा० हार्डीकर थे। डाक्टर हार्डीकर लीग के मन्त्री और लालाजी सभापति थे।

लालाजी पहले तो प्रचार का यह काम अपने ही बल पर करते रहे थे, बाद में लोकमान्य ने इस कार्य में आपकी सहायता की। लोकमान्य ने डाक्टर एनी बेसेण्ट के सहयोग से भारत में होमरूल लीग की स्थापना की थी। इस लीग का कार्य भी मुख्यतः विदेशों में भारतीय स्वराज्य के पक्ष में प्रचार करना था। लोकमान्य ने लीग की निधि में से सत्रह हज़ार रुपये लाला लाजपतराय को भेजे थे। यह सहायता पाकर लालाजी ने अपना कार्य दुगुने उत्साह से शुरू कर दिया। आपने 'यंग इंडिया' नामक एक मासिक पत्र प्रकाशित किया और 'तरुण-भारत', 'भारत का इंग्लैंड पर ऋण', 'भारत के लिए आत्मनिर्णय' आदि पुस्तकें स्वयं लिखकर प्रकाशित कीं। इन पुस्तकों का फ्रांस, इटली, स्पेन, जर्मनी, रूस आदि में प्रचार किया। यूरोप की प्रायः सभी भाषाओं में इनका अनुवाद हो चुका है।

# स्वदेश को वापसी

यूरोप के महायुद्ध में मित्र-दल की जीत हुई। मित्र-दल में भारत भी शामिल था। भारतीय सेना ने इस जीत में बहुत महत्त्वपूर्ण काम किया था। भारतीय नेताओं ने भी जनता को सेना में भरती होने की प्रेरणा दी थी। महात्मा गांधी के साथ लाला लाजपतराय ने भी युद्ध में ब्रिटिश सेना की सहायता के लिए भारतीयों की भरती को प्रोत्साहित किया था। ब्रिटिश राजनीतिज्ञ इस सचाई से परिचित थे। उन्हें यह भी मालूम था कि भारतीय नेताओं ने कितनी आशाओं से यह बलिदान किया है। किन्तु युद्ध के बाद उनकी आशाएं फलीभूत नहीं हुईं। मांटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधारों की योजना भारत की राष्ट्रीय भावनाओं को सन्तुष्ट नहीं कर सकी।

महात्मा गांधी ने इन सुधारों पर कार्य करने से इन्कार कर दिया। उनकी राय में इन सुधारों में कोई भी नवीनता नहीं थी। इसी बीच सरकार ने 'रौलट एक्ट' का विधान देश के सामने रख दिया। यह विधान कौन्सिल में पास न हो, इस उद्देश्य से भारत के नगर-नगर में प्रचण्ड सभाएं हुईं। प्रत्येक शहर में रौलट एक्ट के विरोध में सभाओं का आयोजन हुआ। भारत

के सभी राजनीतिक दल इस विरोध में एकमत थे। किन्तु सरकार पर तो अधिकार का नशा चढ़ा था। उसने जनमत की उपेक्षा करके इस विधान को कानून बना दिया। सरकार की इस स्वेच्छाचारिता का विरोध करने के लिए महात्मा गांधी ने देश का नेतृत्व अपने शक्तिशाली हाथों में ले लिया। गांधीजी ने इस कानून के प्रति विरोध प्रदर्शित करने के लिए जो आज्ञा दी, देश ने उसका पालन किया। अमृतसर में निश्चित दिन से एक दिन पूर्व ही विरोध-सभा की घोषणा हुई। जालियांवाला बाग में हज़ारों लोग एकत्र हुए। उन निहत्थों पर सरकार के गोरे सिपाहियों ने जिस निर्दयता से गोलियों की बौछार की, वह अंग्रेज़ी शासन के इतिहास का सबसे अधिक काला पृष्ठ है।

इन अत्याचारों से भारत की जनता उत्तेजित हो उठी। भारतीयों के हृदय अंग्रेज़ी शासन के विरुद्ध भड़क उठे। सरकार ने अपने अत्याचारी अधिकारियों को दंडित करने के स्थान पर उनका ही पक्ष लिया। हंटर कमीशन की नियुक्ति उन अत्याचारों की तहकीकात के लिए की गई थी। कमीशन ने उनके विरुद्ध आवाज़ उठाने के स्थान पर उनका समर्थन किया। गोरे अफसर, जिनके हाथ निर्दोष जनता के रक्त से रंगे हुए थे, अगर

पदों पर कायम रहे। अत्याचारों का चक्र चलता ही रहा।

लाला लाजपतराय उन दिनों अमेरिका में ही थे। पंजाब के रक्तपात की खबरों से उनका मन व्याकुल हो उठता था, किन्तु वे बेबस थे। अमेरिका से भारत आने की इच्छा होते हुए भी आपको अपने देश में आने की इजाज़त नहीं थी। इस पाबन्दी को दूर करने के लिए आपने फिर ब्रिटिश राजनीतिज्ञों को लिखा। अन्त में आपको अपने देश में आने की आज्ञा मिल गई। किन्तु जिस समय आप भारत वापस आए उस समय उसकी भूमि मानव-रक्त से सींची जा चुकी थी।

भारत में आने से पूर्व आपकी सम्मति थी कि भारत को मांटेग्यू-चेम्सफोर्ड शासन-सुधारों की योजना को कुछ काल के लिए कार्यान्वित करने का प्रयत्न करना चाहिए। उनका विश्वास था कि ब्रिटिश सरकार भारत को आत्मनिर्णय का अधिकार देने में सच्चे हृदय से कोशिश कर रही है। किन्तु भारत में आकर आपकी सम्मति बदल गई। ब्रिटिश सरकार की क्रूरता को देखकर उनका विश्वास इन शासन-सुधारों से भी दूर हो गया। आपका भी निश्चय हो गया कि प्रस्तावित शासन-सुधारों का बहिष्कार करना ही उचित है।

आपके वापस आने के बाद देश ने आपको राष्ट्र के

सबसे ऊंचे आसन पर बिठाया। सन् 1920 में कांग्रेस का विशेष अधिवेशन कलकत्ता में बुलाया गया। यह अधिवेशन महात्मा गांधी द्वारा प्रस्तुत असहयोग-आंदोलन के प्रस्ताव पर विचार करने के लिए संगठित हुआ था। इस कार्यक्रम के पक्ष में जितने प्रतिनिधि थे, विपक्ष में भी उससे कम नहीं थे। बंगाल के पुराने नेता श्री बिपिनचन्द्र पाल ने स्वयं इस कार्यक्रम का विरोध किया था। स्वयं लाला लाजपतराय ने इस कार्यक्रम के सफल होने में संदेह प्रकट किया था। वे भी पूर्ण-रूपेण इससे सहमत नहीं थे। फिर भी यह कार्यक्रम महात्मा गांधी के प्रभावशाली व्यक्तित्व के कारण बहुत बड़े बहुमत से स्वीकृत हो गया। लालाजी ने भी बहुमत के आगे सिर झुकाया, और व्यक्तिगत सम्मति को भूलकर स्वीकृत प्रस्ताव की सफलता के लिए लड़ाई के मैदान में उतर आए।

असहयोग का मन्त्र देश के लिए बिलकुल नया था। जनता इसके असली अभिप्राय को पूरी तरह नहीं समझती थी। नेताओं का कर्त्तव्य था कि वे जनता को इसका अर्थ समझाते और इसकी कार्यविधि से जनमत को परिचित कराते। लालाजी ने पंजाब के शहरों में घूम-घूम कर असहयोग का सन्देश जनता के कानों में पहुंचाया।

पंजाब सरकार लाला लाजपतराय को फिर गिर-फ्तार करने का बहाना ढूंढ़ रही थी। राजद्रोही भाषण देने का अभियोग लगाकर सरकार ने आपको 3 सितम्बर, 1921 के दिन गिरफ्तार कर लिया। जिस अपराध में दूसरों को डेढ़-दो मास की सज़ा होती थी, उसमें ही आपको डेढ़ साल की सज़ा दी गई।

जेल के कष्टों ने आपके थके-मांदे शरीर को फिर से रोगग्रस्त कर दिया। जेल-यात्रा के कुछ दिनों बाद से आपका क़ष्ट बढ़ने लगा। क्षय-रोग ने आपके तपःकृश शरीर को घेर लिया। जेल के अधिकारियों को यह चिन्ता हुई कि कहीं लालाजी का देहान्त जेल की दीवारों में ही न हो जाए। इसलिए सरकार ने आपको 16 अगस्त, 1923 के दिन बिना शर्त रिहा कर दिया।

जेल से तो छूट गए किन्तु रोग से छुटकारा नहीं मिला। स्वास्थ्य-सुधार के लिए आपको सोलन के पहाड़ पर जाना पड़ा। सोलन क्षय के रोगियों के लिए उपयुक्त स्थान है। यहां की जलवायु रोगी को रोगमुक्त कर देती है। सोलन पहुंचकर आपका स्वास्थ्य सुधरने लगा। जब आप स्वस्थ हो गए तो फिर कार्यक्षेत्र में आ गए।

# तिलक विद्यालय और 'लोक सेवक संघ'

लाहौर आकर लाला लाजपतराय ने अनुभव किया कि पंजाब के सार्वजनिक क्षेत्र में राष्ट्रीय विचार के नवयुवकों की बहुत कमी है। पंजाब में आर्यसमाज का प्रभाव था। आर्यसमाज ने सामाजिक सिद्धांतों के प्रचार के लिए अनेक संस्थाएं खोली थीं। इसलिए आर्य-समाज के पास कार्यकर्ताओं का संगठन विद्यमान था। किन्तु राष्ट्रीय महासभा के पास ऐसे कार्यकर्ताओं को तैयार करने के लिए कोई संस्था नहीं थी। अन्य प्रान्तों में कई राष्ट्रीय विद्यालय खुल चुके थे। गांधीजी ने जब सरकारी शिक्षणालयों के बहिष्कार का प्रचार किया था तो हज़ारों विद्यार्थी स्कूलों, कालेजों से निकल आए थे। उनकी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय नेताओं के उद्योग से अनेक राष्ट्रीय विद्यालय खुल गए थे किन्तु पंजाब में अभी ऐसा कोई विद्यालय नहीं था। इसी कमी को पूरा करने के लिए आपने लाहौर में विद्यालय की स्थापना की। लोकमान्य तिलक के प्रति आपके मन में बड़ा आदर था। उनकी स्मृति को अमर बनाने के लिए आपने अपने विद्यालय का नाम 'तिलक विद्यालय' रखा। इस विद्यालय के लिए आपने स्वयं चालीस

हज़ार रुपये का दान किया और एक मकान, जिसका नाम 'लाजपतराय भवन' था, दे दिया। लाजपतराय भवन लाहौर की गिनी-चुनी सुन्दर इमारतों में से एक था। आपके भक्तों ने उसे आपके निवास के लिए बनाया था। किन्तु आप स्वयं उसके पास की पुरानी इमारत में रहने लगे और उस आलीशान मकान को विद्यालय के अर्पण कर दिया। विद्यालय का संचालन आपकी ही देखरेख में होता रहा।

इस विद्यालय की स्थापना के साथ आपने कुछ ऐसे राष्ट्रीय कार्यकर्ता तैयार करने के लिए—जो अपना पूरा समय राष्ट्रीय कार्यों के अर्पण कर सकें और जो निर्वाह-मात्र के लिए धन लेकर राष्ट्रीय सेवा में जीवन देने का व्रत लें—'लोकसेवक संघ' की स्थापना की। लोकसेवक संघ आज भी सफलतापूर्वक काम कर रहा है। पंजाब के सार्वजनिक जीवन में जो राष्ट्रीय भावना आज दिखाई देती है वह इसी एकमात्र संस्था की देन है।

सत्याग्रह का युद्ध होने पर 'लोकसेवक संघ' के सब कार्यकर्ता जेल चले गए। राष्ट्रीय युद्ध में सबसे आगे रहकर कुर्बानी देना ही इन लोक सेवकों का कार्य था।

# हिन्दू-संगठन का कार्य

महात्मा गांधी ने जब अंग्रेज़ी सरकार के विरुद्ध सत्याग्रह की घोषणा की तो सत्याग्रह के आन्दोलन में कुर्बानी करने वाले प्रायः सभी कार्यकर्ता हिन्दू ही थे। मुसलमान नेताओं में से दो एक को छोड़कर सभी ने सत्याग्रह में भाग लेने से इन्कार कर दिया।

मुसलमान नेताओं की इस प्रवृत्ति का परिणाम यह हुआ कि अंग्रेज़ी सरकार ने मुसलमानों को अपनी धार्मिक व साम्प्रदायिक हलचलों में प्रोत्साहन देना शुरू कर दिया। सरकारी कार्यों में भी मुसलमानों का पक्ष लिया जाने लगा और उन्हें हिन्दुओं के विरुद्ध उकसाया गया। सम्पूर्ण ब्रिटिश राज्य का इशारा पाकर भारत के साम्प्रदायिक मुस्लिम नेता प्रबल हो उठे। उन्होंने हिन्दू धर्म और हिन्दू नाम से अंकित प्रत्येक कार्य के विरुद्ध विद्रोह शुरू कर दिया। सरकार ने उनकी पीठ ठोंकी। फल यह हुआ कि हिन्दू धर्म और हिन्दू जाति पर संकट के बादल छा गए।

महात्मा गांधी ने सत्याग्रह बन्द कर दिया था। चौरीचौरा हत्याकांड के बाद उन्हें सत्याग्रह को आगे चलाने का साहस नहीं हुआ। महात्माजी को भारत

सरकार ने छः साल की कैद का हुक्म सुनाकर जेल के सीखचों में बन्द कर दिया था। देश में इन घटनाओं से निराशा और उत्साहहीनता फैल गई।

मुसलमानों के धार्मिक नेताओं ने हज़ारों की संख्या में हिन्दुओं को मुसलमान बनाना शुरू कर दिया। गांव के गांव मुसलमान बनने लगे। कुछ दिन और यही हालत रहती तो हिन्दुओं की संख्या में बहुत कमी हो जाती। वर्गभेद और वर्णभेद के कारण हिन्दू जाति पहले ही निर्बल हो चुकी थी। परस्पर मनोमालिन्य, भेदभाव और छूत-अछूत के संकीर्ण विचारों ने हिन्दू जाति को खंडित कर दिया था। ब्रिटिश सरकार का इशारा पाकर धर्मान्ध मुसलमानों ने हिन्दुओं की इस कमज़ोरी का लाभ उठाना शुरू कर दिया। लाला लाजपतराय साम्प्रदायिक नहीं थे। किन्तु हिन्दुओं के विरुद्ध उठी इस आंधी में उन्होंने ब्रिटेन की कूट राजनीति का खेल देखा। इस साम्प्रदायिक संघर्ष की आड़ में अंग्रेज़ी सरकार राजनीतिक लड़ाई लड़ रही थी। लालाजी की दूरदर्शिता ने इसके भयंकर परिणाम की कल्पना कर ली। उन्होंने अच्छी तरह समझ लिया कि हिन्दू जाति पर प्रहार करके भारत की विदेशी सरकार देश के उस बहुमत को, जो मुख्यतः राष्ट्रीय

विचारों वाला है, कमज़ोर बनाना चाहती है ।

सरकार की इस कूटनीति का रहस्य जानने के बाद लाला लाजपतराय चुप नहीं बैठ सके । उन्होंने भी स्वामी श्रद्धानन्द और महामना मदनमोहन मालवीय के कन्धों के साथ कन्धा मिलाकर हिन्दू संगठन के कार्य में अपनी पूरी शक्ति लगा दी । हिन्दू समाज को बलशाली बनाना भी राष्ट्रीय कार्य था । वह समाज-सुधार के कामों को भी उतना ही महत्त्वपूर्ण मानते थे जितना राष्ट्रीय कार्यों को ।

लालाजी का सहयोग पाकर हिन्दू संगठन का काम बड़े वेग से होने लगा । सामाजिक क्षेत्र में लालाजी पहले भी ठोस काम कर चुके थे । जीवन के प्रारम्भिक दिनों में आर्यसमाज के साथ आपने समाज-सुधार के कई उपयोगी काम किए थे । इन सामाजिक कामों को भी वे देश के राष्ट्रीय उत्थान में सहायक मानते थे । हिन्दू-संगठन के कार्य में आप अन्त तक सक्रिय भाग लेते रहे । आपकी सेवाओं से हिन्दू-जाति में जो नई जागृति और स्फूर्ति आई वह हिन्दू संगठन के इतिहास में सदा स्मरण की जाएगी ।

# साइमन कमीशन

मांटेग्यू-चेम्सफोर्ड शासन-सुधारों की योजना में एक सुझाव यह भी था कि योजना के कार्यान्वित होने के दस वर्ष बाद एक कमीशन सुधार-योजना की गति-विधि देखने और बदली हुई परिस्थितियों में आवश्यक परिवर्तनों को सुझाने के लिए बिठाया जाएगा। यह भी आशा व्यक्त की गई थी कि यदि प्रस्तावित शासन-सुधारों का प्रभाव हितकर होगा तो भारत को उत्तर-दायी शासन के सम्पूर्ण अधिकार दे दिए जाएंगे। इस प्रभाव की परख करने के लिए ही सर साइमन की अध्यक्षता में ब्रिटिश सरकार ने एक कमीशन की नियुक्ति की थी।

साइमन की अध्यक्षता में कमीशन की नियुक्ति होने के कारण इसे साइमन कमीशन कहा जाता था। भारत के राष्ट्रीय नेताओं को इस कमीशन की रूपरेखा से तीव्र असन्तोष था। उनकी मांग थी कि कमीशन के सदस्यों में भारत की जनता के कुछ प्रतिनिधियों को भी स्थान दिया जाए। किन्तु ब्रिटिश सरकार ने भार-तीयों की इस छोटी-सी न्याय-संगत प्रार्थना को भी ठुकरा दिया। सरकार के इस तिरस्कारपूर्ण व्यवहार से

देश में विक्षोभ की लहर दौड़ गई। देश के नेताओं ने एकमत होकर साइमन कमीशन के बहिष्कार का निश्चय किया। कमीशन जहां भी जाता था, उसका काले झंडों से विरोध किया जाता था। उसके वापस जाने की पुकार की जाती थी और जनता के प्रतिनिधि उसके सामने साक्षी देने के लिए सम्मुख नहीं आते थे।

लाहौर में यह कमीशन 30 अक्तूबर, 1928 को पहुंचने वाला था। कांग्रेस की आज्ञा मानकर हज़ारों आदमी काले झंडे लेकर कमीशन का स्वागत करने के लिए स्टेशन पर आए थे। सरकार ने भी गोरे फौजियों और घुड़सवारों की सेना को जनता के दमन के लिए तैनात कर दिया था। शहर में दफा 144 लगा दी गई थी। जनता भी इन अन्यायमूलक आज्ञाओं की उपेक्षा करना सीख गई थी। दफा 144 भंग करके जनता ने सभा भी की और जुलूस बनाकर हज़ारों आदमी स्टेशन पर पहुंच गए।

उस जुलूस का नेतृत्व हमारे चरितनायक पंजाब-केसरी लाला लाजपतराय कर रहे थे। पुलिस के अधिकारियों ने जुलूस को तितर-बितर होने की चेतावनी दी। किन्तु जनता तो प्राणों का मोह छोड़कर वहां आई थी। पुलिस-अफसरों ने निहत्थे लोगों पर लाठियां




लालाजी साइमन कमीशन के विद्रोह में जुलूस का नेतृत्व करते हुए

बरसाने की आज्ञा दे दी। क्षण-भर में हज़ारों लाठियां निर्दोष लोगों के सिरों पर पड़ने लगीं।

लालाजी तो बच ही नहीं सकते थे। वे जुलूस के आगे-आगे चल रहे थे और पुलिस की लाठियों के आक्रमण को अपने कन्धों पर झेल रहे थे। उस दिन की चोट ने लालाजी की छाती पर घाव कर दिया; चमड़ी छिल गई और आहत स्थान पर सूजन आ गई। ऊपर से देखने पर वह घाव साधारण दिखाई देता था। लालाजी का वृद्ध और जराजीर्ण शरीर इतनी चोटों को बर्दाश्त नहीं कर सका। छाती का दर्द प्रतिदिन बढ़ता ही गया। 15 नवम्बर, 1928 के दिन उनके सारे शरीर में पीड़ा होने लगी। बुखार भी बढ़ गया। रात बेचैनी से कटी। सुबह छः-सात बजे के बीच आपने प्राण त्याग दिए।

लालाजी की मृत्यु के समाचार से पंजाब-भर में ही नहीं, देश-भर में शोक के बादल छा गए। शव-यात्रा में सम्मिलित होने का समय बहुत थोड़ा था—किन्तु इतने थोड़े समय में भी लाखों मनुष्य इस यात्रा में सम्मिलित हो गए थे। रावी नदी के तट पर सूर्यास्त के समय आपके शव की अन्तिम क्रिया की गई।

मुद्रक : रविन्द्रा प्रिंटिंग प्रेस, कश्मीरी गेट, दिल्ली 5852

# छोटे बच्चों के लिए बड़े टाइप में मनोरंजक, ज्ञानवर्धक पुस्तकें

## बड़े आकार में सचित्र लोककथाएं

○जापान की लोककथाएं ○ अफ्रीका की लोककथाएं ○ पड़ोसी देशों की लोककथाएं ○ लोककथाएं उत्तरपूर्वांचल की ○ असम की लोककथाएं ○ बंगाल की लोककथाएं ○ पंजाब की लोककथाएं ○ उत्तर प्रदेश की लोककथाएं ○ गुजरात की लोककथाएं ○ हिमाचल की लोककथाएं ○ बिहार की लोककथाएं ○ राजस्थान की लोककथाएं ○ महाराष्ट्र की लोककथाएं ○ केरल की लोककथाएं ○ मध्य प्रदेश की लोककथाएं ○ हरियाणा की लोककथाएं ○ मारीशस की लोककथाएं ○ रूस की लोककथाएं ○ चेकोस्लोवाकिया की लोककथाएं ○ बुल्गारिया की लोककथाएं ○ वियतनाम की लोककथाएं ○ तिब्बत की लोककथाएं (4.00) ○ बर्मा की लोककथाएं (8.00) मूल्य 6.00

## बहुरंगी बालोपयोगी कविताएं

○बंदर बांट 5.00 ○ नीली चिड़िया 5.00 ○ जन्मदिन भेंट 5.00 ○ सुनो कहानी 6.00 ○ अंधेर नगरी 6.00 ○ हुआ सबेरा उठो-उठो 5.00 हम बालवीर 3.00 ○ आज़ादी के गीत 4.00 ○ निंदिया आ जा 5.00 ○देश हमारा 6.00 ○ विजय गीत 5.00 ○ अगर-मगर 5.00 ○ फुलवारी 5.00 ○ चाचा नेहरू 4.00 ○ आओ करें सवारी 4.00 ○ अपना देश 6.00 ○ फूल खिले हैं डाली-डाली 4.00 ○ हमारे पक्षी 5.00○खेलें-कूदें नाचें गाएं 4.00 ○ मेरी गुड़िया कुछ तो बोल 4.00 कहावतों के गीत 6.00

# सरल प्रेरणाप्रद जीवनियां

| | |
|---|---|
| मेरा बचपन | ईश्वरचन्द्र विद्यासागर |
| झांसी की रानी | सरदार भगतसिंह |
| रवीन्द्रनाथ टैगोर | स्वामी रामतीर्थ |
| लाला लाजपतराय | गुरु गोविन्द सिंह |
| सरदार पटेल | सदाचारी बच्चे |
| डॉ राजेन्द्रप्रसाद | महापुरुषों का बचपन |
| विनोबा भावे | वीर पुत्रियां |
| जवाहरलाल नेहरू | लालबहादुर शास्त्री |
| महात्मा गांधी | आदर्श बालक |
| चन्द्रशेखर आजाद | आदर्श देवियां |
| श्यामप्रसाद मुखर्जी | सच्ची देवियां |
| गुरु नानकदेव | इन्दिरा गांधी |
| सुभाषचन्द्र बोस | भारत के महान् ऋषि |
| शिवाजी | अच्छे बच्चे |
| महाराणा प्रताप | गौतम बुद्ध |
| चाणक्य | सम्राट् अशोक |
| लोकमान्य तिलक | वीर हनुमान |
| श्रीकृष्ण | हमारे स्वामी |
| स्वामी विवेकानन्द | श्री अरविन्द |
| गणेश शंकर 'विद्यार्थी' | वीर सावरकर |
| गोस्वामी तुलसीदास | महर्षि वाल्मीकि |
| हमारे राष्ट्रनिर्माता | महाकवि कालिदास |
| मीराबाई | साहसी बालक |
| गुरु तेगबहादुर | |